वह लड़का जिसने अपनी जीभ बाहर निकाली

एक यहूदी लोक कथा

एडिथ टार्बेस्कु
चित्र: जूडिथ क्रिस्टीन मिल्स
हिंदी: छाया भदौरिया

वह लड़का जिसने अपनी जीभ बाहर निकाली

एक यहूदी लोक कथा

एडिथ टार्बेस्कु

चित्र: जूडिथ क्रिस्टीन मिल्स

हिंदी: छाया भदौरिया

एक बार, हंगरी के एक छोटे से गाँव में, जो अपने दयालु लेकिन मूर्ख लोगों के लिए जाना जाता था, बहुत बड़ा बर्फ़ीला तूफ़ान आया।

जब फेरीवाले की विधवा ने अपने इकलौते बेटे को चूल्हे में आग जलाने के लिए घर के अंदर बुलाया, तो लड़के ने उत्तर दिया, “अभी नहीं” और अपनी जीभ निकालकर अपनी माँ को चिढ़ाने लगा।

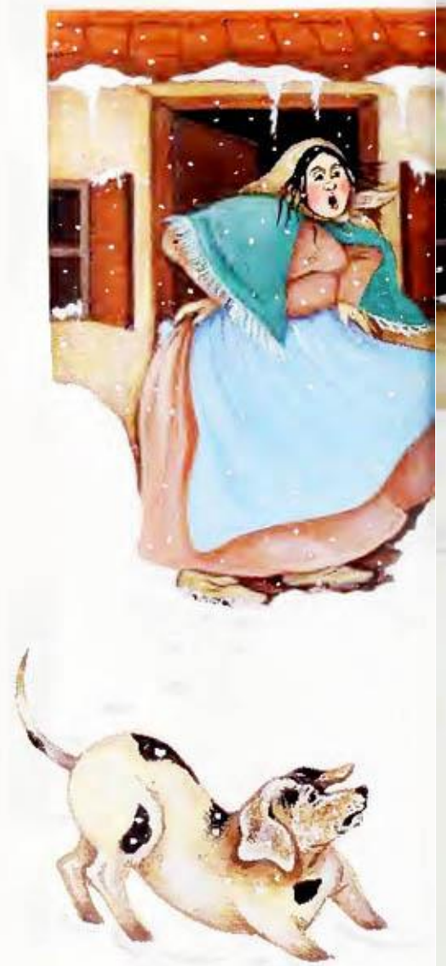

"लेकिन तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम आग जलाओगे। तुमने मुझे अपना वचन भी दिया था।"

"वादा, वादा कुछ नहीं, मैं बहुत व्यस्त हूँ।" उसने एक और बर्फ़ का गोला बनाया और हवा में उड़ा दिया।

"रुको, मैं अभी तुम्हें पकड़ती हूँ, वह गुस्से से चिल्लाई। "नहीं, नहीं, नहीं, तुम मुझे नहीं पकड़ पाओगी!"

वे चारों ओर गोल-गोल दौड़ने लगे, और जैसे ही उसकी माँ उसे पकड़ने वाली थी, उसने फिर से अपनी माँ को जीभ बाहर निकालकर दिखाई । इस बार, वह फिसल गया और लोहे की बाड़ से टकराकर गिर गया। ठंड इतनी थी कि उसकी जीभ लोहे की बाड़ से चिपक गई। जब महिला ने देखा कि क्या हुआ, उसने अपने बेटे को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन वह उसे छुड़ा नहीं सकी। इसलिए बेचारी विधवा बर्फ में रेंगते हुए जैसे-तैसे मोची की दुकान तक पहुँची।

मेंडल मोची ने सारी कहानी सुनने के बाद कंधे उचकाते हुए कहा, “काश मैं आपकी मदद कर पाता,”

“लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ?”

महिला ने दुकान में लगी जूतों की कतारों की ओर इशारा करते हुए कहा,

"आप जीभों के बारे में जानते हैं।"

मेंडल ने समझाया, "जूतों में जीभें हैं, मैं जानता हूँ। बूटों में जीभें हैं, मैं जानता हूँ। लेकिन लोहे की बाड़ पर जीभें जमी हुई हैं - मुझे नहीं पता।

आओ, यूसेल कसाई से मिलने चलते हैं।"

“आइए, मैं आपकी क्या सेवा करूँ?” युसेल ने पूछा, जो लकड़ी के एक छोटे-से स्टूल पर बैठकर मुर्गियाँ को काट रहा था। जब महिला ने उसे अपनी पूरी समस्या बता दी, तो युसेल ने कंधे उचकाते हुए कहा, "अगर मैं मदद कर सकता हूँ, तो ज़रूर करूँगा। लेकिन मैंने ऐसी घटना पहले कभी नहीं सुनी।”

उसने खिड़की में मांस की ओर इशारा करते हुए कहा, "देखो, तुम्हारे पास हर तरह का मांस है।"

“ताजा मांस, मुझे पता है। स्मोक्ड मांस, मुझे पता है,” युसेल कसाई ने कहा। “लेकिन मैं कभी भी किसी लंबी या छोटी जमी हुई जीभ से नहीं मिला, अगर वह मेरी दुकान में चली भी आती तो भी मुझे इसका पता नहीं चलता।”

इसलिए वे सब सड़क पार करके हर्शेल बेकर के पास गए। बेकर ने कहा कि उसने भी ऐसी किसी चीज़ के बारे में कभी नहीं सुना है, लेकिन उसने बर्तनों का एक थैला उठाया और मदद के लिए चल दिया। जब वे लड़के के पास पहुँचे, हर्शेल ने अपना छोटा-सा थैला वहाँ उड़ेल दिया।

"यह बेलन, मैं उपयोग नहीं कर सकता। कुकी कटर, मैं उपयोग नहीं कर सकता। अहा..' उसने खमीर से भरी एक छोटी थैली निकाली और लड़के की जीभ पर थोड़ा-सा डाला। "जब आप चाहते हैं कि डबल रोटी फूल जाए, तो आप ख़मीर डालते हैं," बेकर हर्शेल ने समझाया। "इसलिए उसकी जीभ पर भी खमीर डालने से जीभ ऊपर उठनी चाहिए।"

"यह तो बहुत बढ़िया तरकीब है" युसेल कसाई ने कहा।

"कमाल की सोच!" मोची मेंडल ने कहा।

उस महिला ने एक-एक कर सबकी ओर देखा। लोगों ने शायद सच कहा था कि यह शहर मूर्खों से भरा है।

इस बीच, भीड़ जमा हो रही थी और हर कोई इस बात पर बहस कर रहा था कि अब क्या किया जाए।

"मेरे पास एक तरकीब है" रसोइये ने अपने ऐप्रन से एक स्पैटुला निकालते हुए कहा। "मैंने पैनकेक पलटे हैं; मैंने अंडे पलटे हैं, तो मैं जीभ क्यों नहीं पलट सकता?"

जब भीड़ ने रसोइये की कलाई के हर घुमाव और मोड़ को देखा, तो वे अपनी साँसें रोककर करीब आ गए।

आख़िरकार, रसोइया अपना सिर हिलाते हुए बुदबुदाया। "इससे कोई फायदा नहीं, जीभ पैनकेक या अंडे की तरह नहीं है।"

भीड़ भी चिल्लाई, "हाँ यह सही है, जीभ पैनकेक या अंडे की तरह नहीं है।"

बढ़ई चिल्लाया, "मेरे पास एक तरकीब है।" हम लड़के के चारों ओर एक छोटी सी झोपड़ी बनाएँगे। इस तरह वह तब तक गर्म रहेगा जब तक हमें उसे आज़ाद करने का कोई रास्ता नहीं मिल जाता।"

तब तक बढ़ई कुछ लकड़ियाँ लाने के लिए दौड़कर गया, रसोइया एक बर्तन में चिकन सूप लेकर आ गया। फिर बेकर एक प्लेट में डबलरोटी का ढेर लगाकर लौटा, और किसी ने एक फोल्डिंग टेबल लगा दी।

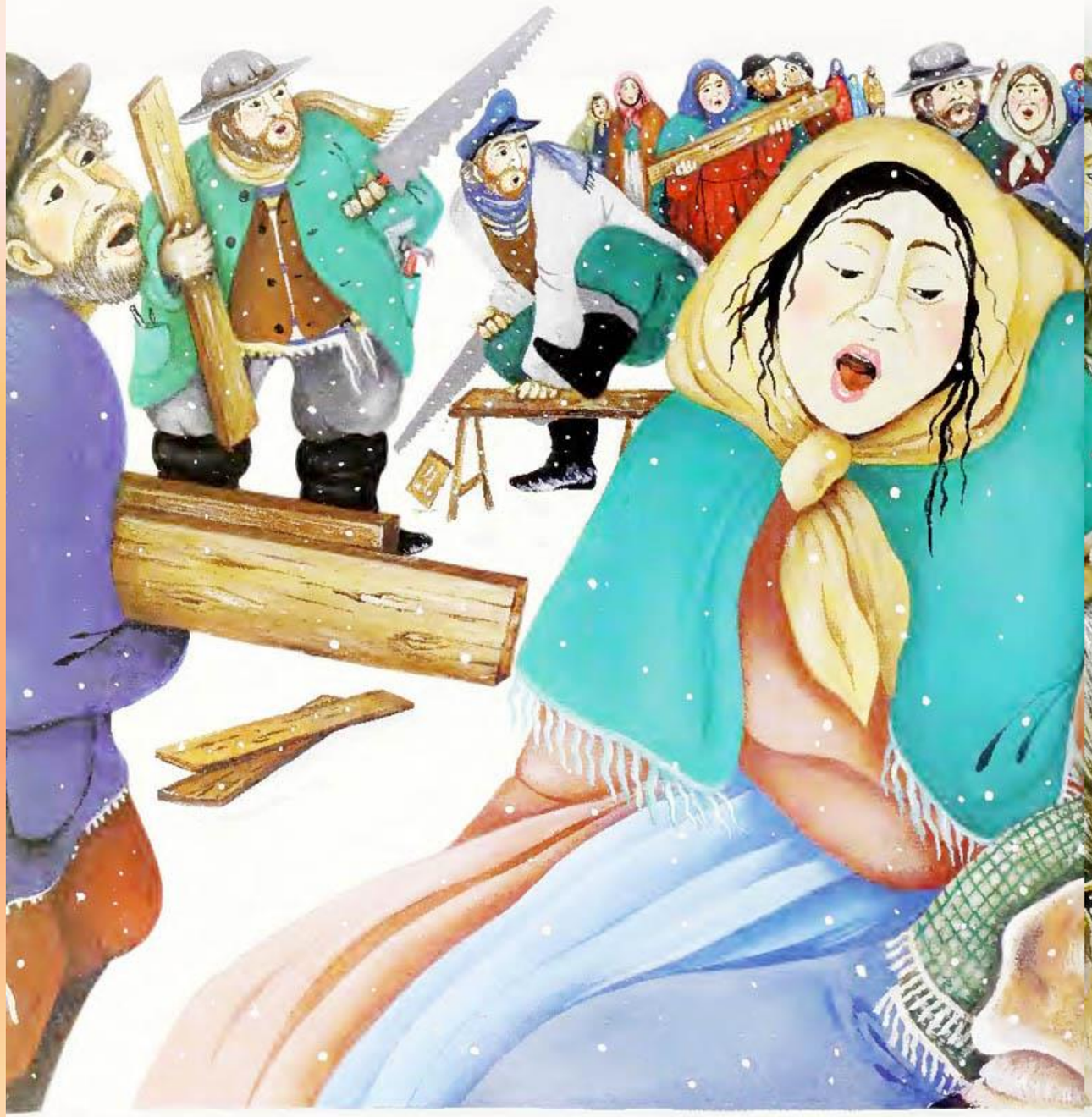

जब बढ़ई वापस आया, तो उसने देखा कि लोग खुशी से मदद करने के लिए आगे आए और काटना-पीटना शुरू कर दिया था। जब लड़के ने देखा कि उसके पड़ोसी उसकी कितनी परवाह करते हैं, तब उसे याद आया कि उसने कितनी बार उनकी मदद करने से इनकार कर दिया था, और वह रोने लगा।

"मत रोओ" उन्होंने उससे कहा। "हम सब तुम्हारी मदद के लिए यहाँ हैं।"

तभी एक घुमंतू लोहार वहाँ आया। जब उसने सुना कि समस्या क्या है, तो उसने पास ही की एक चिमनी से गर्म कोयले एकत्र किए और लोहे की बाड़ के चारों ओर ढेर लगा दिया।

लोहार ने कहा, "कोयले लोहे को गर्म कर देंगे, लोहा बर्फ को पिघला देगा और लड़का मुक्त हो जाएगा।" फिर वह लोहे की बाड़ के पास बैठ गया और अंगारों को हवा देने लगा।

लड़के ने जो कुछ भी सुना उस पर उसे विश्वास नहीं हो रहा था। उसे भूख भी लग रही थी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और सेब की चटनी के साथ आलू पैनकेक से भरी प्लेट का सपना देखने लगा। उसने बोलने की भी कोशिश की, लेकिन वह केवल "आह!" की ही आवाज निकाल सका।

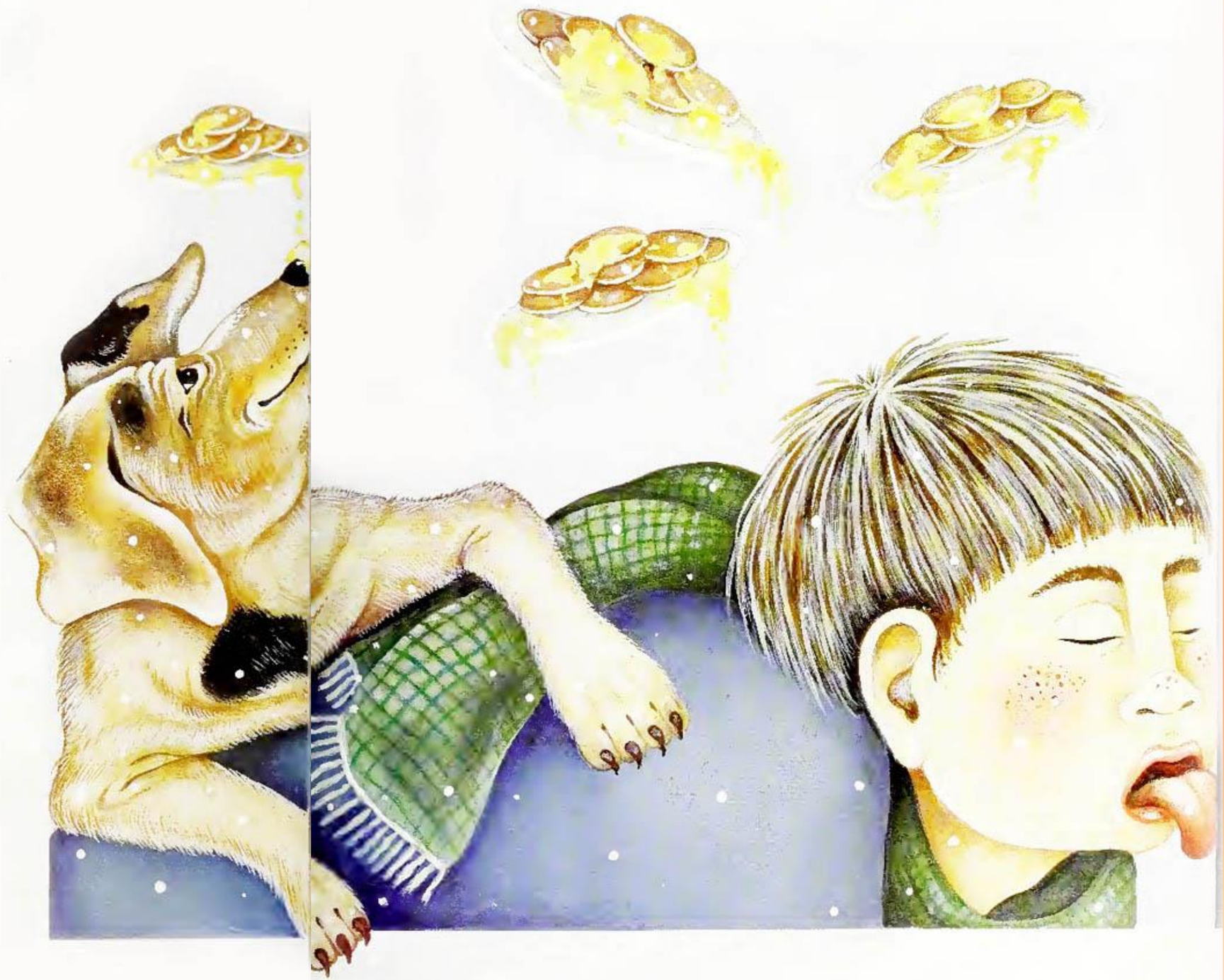

जब लोहार इंतजार कर रहा था, तो लोग बाड़ को छूकर यह देखने के लिए आए कि क्या बर्फ पिघल रही है। तभी गर्मी बढ़ने लगी, बाड़ अंततः गर्म हो रही थी। यहाँ तक कि लड़के का चेहरा भी गर्मी से तमतमा गया था। अंततः लोहार ने कहा, "अपनी जीभ हिलाकर देखो।"

लड़के ने कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसने फिर कोशिश की। और फिर, जब तक उसे महसूस नहीं हुआ कि उसकी जीभ थोड़ी हिल रही है।

"देखो," लड़के की माँ चिल्लाई। "वह छूट गया!"

लड़के ने अपनी माँ को गले लगाया और उसे घुमाया। "मुझे खेद है कि मैं शरारती था," उसने उससे कहा। "मैं ऐसा दोबारा कभी नहीं करूँगा।"

इसके बाद उसने लोहार को धन्यवाद दिया और लोगों से कहा, "मैं वादा करता हूँ कि जब भी आपको जरूरत होगी मैं आपकी मदद करूँगा।"

और तब से, उसने बेकर को रोटी गूँथने में, मोची को फीते वाले जूते बनाने में, बढ़ई को घर बनाने में और कसाई को मुर्गियों को काटने में मदद की।

और छोटे से गाँव के लोगों ने भी कुछ सीखा।

उन्होंने सीखा कि जमी हुई जीभ को कैसे मुक्त किया जाए।

अंत